ईश्वर अंश जीव अविनाशी

डॉ. मुकेश नायक

मंदिर में ईश्वर के श्री विग्रह को देखते-देखते जब व्यक्ति संपूर्ण जगत में ईश्वर को देखने लगता है, तब वह सृष्टि की सार्वभौमिक चेतना, नियंता और परम तत्व से एकरस हो जाता है. वही अवस्था है जहाँ साधक का सीमित मैं विलीन होकर अनंत वह में समा जाता है. तब आत्मा अनुभव करती है— अहम् ब्रह्मास्मि — मैं ब्रह्म हूँ. यह कोई अहंकार का वचन नहीं, बल्कि अहंकार के पूर्ण विसर्जन का उद्घोष है. जब देह, मन, बुद्धि और नाम-रूप की सीमाएँ गिर जाती हैं, तब शुद्ध चेतना स्वयं को ब्रह्मस्वरूप पहचान लेती है.

बूंद जब समुद्र में गिरती है, तब उसका पृथक अस्तित्व समाप्त नहीं होता, बल्कि वह समुद्र की विराटता में विस्तृत हो जाती है. उसी प्रकार जीव जब परमात्मा में लीन होता है, तब वह नष्ट नहीं होता, बल्कि अनंत शांति, ज्ञान और आनंद का स्वरूप बन जाता है. साधक तब जान लेता है कि वह कभी सीमित था ही नहीं, केवल अज्ञान के कारण स्वयं को छोटा समझ बैठा था.

जैसे प्रज्ञा पर जमी अज्ञान की राख उड़ जाए, वैसे ही जब विवेक का सूर्य उदित होता है, तब भीतर छिपा दिव्य अग्नितत्व प्रकट हो जाता है. व्यक्ति स्वयं के भीतर परमात्मा को देखने लगता है और फिर बाहर भी उसी परम सत्ता का अनुभव करता है. वृक्षों में, नदियों में, पशु-पक्षियों में, मानव में, शत्रु-मित्र में, सुख-दु:ख में— हर कहीं वही एक चेतना दिखाई देने लगती है. यही समदृष्टि है, यही योग है, यही मुक्ति का द्वार है.

ज्ञान के जागरण होने से साधक सर्वव्यापी परमात्मा के एकत्व को जान लेता है. वह समझता है कि संसार अनेक दिखाई देता है, पर मूल में सब एक ही ऊर्जा, एक ही सत्य, एक ही परम सत्ता का विस्तार है. नाम भिन्न हैं, रूप भिन्न हैं, पर सार एक है. जैसे अनेक दीपकों में जलती लौ का प्रकाश एक ही अग्नि तत्व का परिचय देता है, वैसे ही असंख्य जीवों में धड़कता जीवन एक ही परमात्मा का स्पंदन है.

ईश्वर अंश जीव अविनाशी,
चेतन अमल सहज सुखराशि.

जीव ईश्वर का अंश है, वह नश्वर देह नहीं, अविनाशी चेतना है. उसका मूल स्वभाव निर्मलता, शांति, प्रेम और आनंद है. दु:ख उसका स्वभाव नहीं, दु:ख तो विस्मरण है. जब वह अपने स्रोत को भूल जाता है, तब भटकता है; जब स्मरण कर लेता है, तब मुक्त हो जाता है.

कबीरदास जी ने कहा है—

मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास.
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास..

अर्थात परमात्मा बाहर दूर नहीं, भीतर निकटतम है. जो स्वयं के हृदय में उतर गया, उसने परमात्मा को पा लिया.

ज्यों तिल में तेल है, ज्यों चकमक में आग.
तेरा साईं तुझमें है, तू जाग सके तो जाग..

जिस प्रकार तिल में तेल और पत्थर में अग्नि छिपी रहती है, वैसे ही मनुष्य के भीतर परमात्मा छिपा है. आवश्यकता केवल जागरण की है.

गीता का संदेश भी यही है कि ज्ञानी पुरुष सब प्राणियों में एक ही आत्मा को देखता है—

विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि.
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता: समदर्शिन:..

ज्ञानी मनुष्य विद्वान ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और चांडाल— सबमें एक ही परमात्मा को देखता है.

जब साधक का मन निर्मल हो जाता है, तब उसे संसार बंधन नहीं लगता. वही संसार जो पहले मोह का कारण था, अब ईश्वर की लीला प्रतीत होता है. वही जीवन जो पहले संघर्ष था, अब साधना बन जाता है. वही श्वास जो पहले सामान्य थी, अब मंत्र बन जाती है.

मन चंगा तो कठौती में गंगा.

यदि मन पवित्र है तो साधारण पात्र में भी गंगाजल का अनुभव होता है. बाहरी साधन तभी फलित होते हैं जब भीतर श्रद्धा और निर्मलता हो.

जब तक मनुष्य केवल मूर्ति में ईश्वर को देखता है, तब तक उसकी यात्रा प्रारंभिक है. जब वह समस्त जगत में ईश्वर को देखने लगता है, तब उसकी साधना परिपक्व होती है. और जब वह स्वयं में ईश्वर को अनुभव करने लगता है, तब साधना पूर्ण होती है.

सिया राममय सब जग जानी.
करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी..

जब सब जगत राममय दिखाई देने लगे, तब द्वेष किससे रहेगा? तब हिंसा किस पर होगी? तब छल किससे होगा? तब तो हर प्राणी पूजनीय हो जाता है.

सच्चा ज्ञान व्यक्ति को विनम्र बनाता है. जो जानता है कि सबमें वही परमात्मा है, वह किसी का अपमान नहीं करता. जो समझता है कि सब उसी एक के रूप हैं, वह किसी से घृणा नहीं करता. जो अनुभव करता है कि मैं और तू भिन्न नहीं, वही प्रेम का सागर बनता है.

जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप.
जहाँ क्रोध तहाँ काल है, जहाँ क्षमा तहाँ आप..

जहाँ करुणा है, वहाँ ईश्वर है. जहाँ क्षमा है, वहाँ परमात्मा का निवास है. अत: मंदिर से प्रारंभ हुई दृष्टि जब विश्व तक पहुँचती है, और विश्व से लौटकर आत्मा में उतरती है, तब साधक पूर्णता को प्राप्त करता है. वही अवस्था समाधि है, वही ब्रह्मानुभूति है, वही अमृत है. तब बूंद समुद्र बन जाती है, दीप सूर्य में विलीन हो जाता है, और जीव स्वयं परमात्मा रूप हो जाता है.

अहम् ब्रह्मास्मि. तत् त्वम् असि. सर्वं खल्विदं ब्रह्म.

यही अंतिम सत्य है, यही सनातन ज्ञान है, यही जीवन का परम उद्देश्य है.

क्लास by बड़े भाई

छोड़कर देखो बहाने जीतना तय है तुम्हारा

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

कुछ पाने की यात्रा में, यदि कोई हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है तो वो है हमारा आलसपन, हमारी बहानेबाजी. लेकिन दुर्भाग्य कि वो हमारा सबसे प्रिय मित्र है . हमें उसी के साथ रहना पसंद है और इसीलिए हम सबकुछ टालते रहते हैं. आज का कल में, कल का परसों में. फिर जब समय निकल जाता है तो हम पछताते हैं. जबकि सच यह है कि जिससे भी तुम्हे डर लगता है उसके सामने एक बार खड़े होकर देखो. सामना करके देखो. अपने बहाने छोड़कर देखो. यकीन मानिए आप विजेता होंगे. मैं अपनी यह बात मेरी इसी कविता से कहना चाहूंगा. पढ़िएगा.

यदि स्वयं को साध लो तो
साध लोगे समय सारा
तुम छोड़कर देखो बहाने
जीतना तय है तुम्हारा

वह दूर देखो डालियों पर
आंधियों में चल रहे हैं
पंख कुतरे दिख रहे पर
हौसले दम भर रहे हैं
उन पंछियों के पास देखो
कौन है उनका सहारा
तुम छोड़कर देखो बहाने
जीतना तय है तुम्हारा

तुम कम नहीं उस धार से,
जो चीरती है पर्वतों को
कम नहीं उस नाद से तुम
जो कंपाता तरु वनों को
पर तुमने ही माना स्वयं को
कोई निर्बल, बेसहारा
तुम छोड़कर देखो बहाने
जीतना तय है तुम्हारा

देखो, अभी कुछ देर पहले
कोई तुमसा ही गया है
कह रहे, जिसको असंभव
कोई संभव कर गया है
तुम पाँव को बांधे हुए हो
पथ कहां होगा तुम्हारा
तुम छोड़कर देखो बहाने
जीतना तय है तुम्हारा..

टालकर सब काम कल पर
तुम छिपे बैठे जहां
राम जाने कितने दिन तक
बचा लोगे आशियां
उठकर समय की बांह थामो
पाओगे तब ही किनारा
तुम छोड़कर देखो बहाने
जीतना तय है तुम्हारा

कथा

खास उपहार

श्रीकुमार दत्त

नील अपने बारहवें जन्मदिन पर बहुत उत्साहित था. केक काटने के बाद वह अपने पिता के पास जाकर मासूमियत से बोला, पापा, अगले साल जब मैं टीन हो जाऊँगा, तो आप मुझे क्या खास गिफ्ट देंग. पिता ने उसके सिर पर हाथ फेरा और मुस्कुराकर कहा, अभी तो बहुत समय है, मेरे बेटे. तुम्हें जो चाहिए होगा वही दूँगा. नील संतुष्ट होकर खेल में लग गया, लेकिन उसे क्या पता था कि आने वाला साल उसकी जिंदगी का सबसे कठिन साल होगा.

कुछ महीनों बाद नील की तबीयत बिगड़ने लगी. वह पहले जैसा चंचल नहीं रहा. उसे हमेशा थकान रहती, बार-बार उल्टियाँ होतीं, पैरों में सूजन आने लगी और शरीर में अजीब सी खुजली बनी रहती. शुरुआत में सबको लगा कि यह सामान्य बीमारी है, इसलिए साधारण दवाइयाँ दी गईं. लेकिन हालत सुधरने के बजाय और खराब होती गई. आखिरकार डॉक्टर के पास ले जाया गया. कई जाँचों के बाद रिपोर्ट आई तो सबके पैरों तले जमीन खिसक गई नील की किडनियाँ लगभग काम करना बंद कर चुकी थीं. डॉक्टरों ने बताया कि यह एक ऑटोइम्यून बीमारी हो सकती है, जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अपने ही अंगों पर हमला करने लगती है. नील के पिता के चेहरे पर चिंता की गहरी लकीरें उभर आईं, लेकिन उन्होंने खुद को संभाला. डॉक्टर, मेरे बेटे को बचाने के लिए क्या करना होगा उन्होंने दृढ़ स्वर में पूछा. डॉक्टर ने गंभीरता से कहा, उसे तुरंत डायलिसिस पर रखना होगा. और स्थायी समाधान के लिए किडनी ट्रांसप्लांट जरूरी है. उस दिन से नील का जीवन अस्पताल और मशीनों के बीच सिमट गया. हर दूसरे दिन डायलिसिस होता, जिससे वह और कमजोर हो जाता. लेकिन उसके पिता हमेशा उसके साथ रहते उसे हिम्मत देते, कहानियाँ सुनाते और कहते, तुम बहुत बहादुर हो, जल्दी ठीक हो जाओगे.किडनी दाता ढूँढना आसान नहीं था. रिश्तेदारों की जाँच हुई, लेकिन कोई मैच नहीं मिला. समय बीतता जा रहा था और नील की हालत धीरे-धीरे बिगड़ रही थी. एक दिन डॉक्टर ने नील के पिता को अलग बुलाया. कुछ देर बाद वे बाहर आए, उनकी आँखों में अजीब सा सुकून था, जैसे उन्होंने कोई बड़ा फैसला ले लिया हो. तीन महीने की लंबी प्रतीक्षा के बाद आखिरकार एक उपयुक्त दाता मिल गया, ऑपरेशन की तारीख तय हो गई. संयोग से वह तारीख नील के तेरहवें जन्मदिन से ठीक एक दिन पहले थी. ऑपरेशन के दिन अस्पताल में तनाव का माहौल था. कई घंटों तक सर्जरी चली. आखिरकार डॉक्टर बाहर आए और बोले, ऑपरेशन सफलरहा.

नील की माँ की आँखों से राहत के आँसू बह निकले. अगली सुबह नील ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं. उसे कमजोरी महसूस हो रही थी, लेकिन पहले से बेहतर भी लग रहा था. तभी डॉक्टर कमरे में आए और मुस्कुराते हुए बोले, हैप्पी बर्थडे, यंग मैन! सब कुछ ठीक है. तुम बहुत जल्द घर जा सकोगे.नील के चेहरे पर हल्की मुस्कान आई. थैंक यूए डॉक्टर. पापा कहाँ हैं उसने धीमे से पूछा. डॉक्टर ने एक पल के लिए नजरें चुराईं, फिर कहा. वो अभी बाहर हैं, आराम कर रहे हैं. थोड़ी देर बाद एक नर्स कमरे में आई. उसके हाथ में फूलों का एक सुंदर गुलदस्ता था. जन्मदिन मुबारक हो, नील, उसने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा, ये तुम्हारे पापा की तरफ से है .नील ने हैरानी से पूछा, पापा खुद क्यों नहीं आए वो ठीक तो हैं. नर्स का चेहरा अचानक फीका पड़ गया. उसने जल्दी से कहा, मैं... मैं अभी देखती हूँ और वह जल्दी से कमरे से बाहर चली गई. नील के मन में अजीब सी बेचैनी होने लगी. कुछ देर बाद उसकी माँ कमरे में आईं. उनकी आँखें सूजी हुई थीं, जैसे वे बहुत रोई हों. माँ, पापा कहाँ हैं नील ने घबराकर पूछा. माँ उसके पास बैठ गईं. उन्होंने उसका हाथ थामा और खुद को संभालते हुए बोलीं, नील तुम्हारे पापा ने तुमसे वादा किया था नाए कि वो तुम्हें सबसे खास गिफ्ट देंगे नील ने धीरे से सिर हिलाया. माँ की आँखों से आँसू बहने लगे. उन्होंने अपना वादा निभाया, बेटा, उन्होंने तुम्हें अपनी किडनी दी है3नील की आँखें फैल गईं. क्या लेकिन पापा, माँ ने उसे सीने से लगा लिया और टूटते हुए कहा ऑपरेशन के बाद उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई और वो हमें छोड़कर चले गए.

कमरे में सन्नाटा छा गया. नील की दुनिया जैसे थम गई. उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, लेकिन आवाज़ नहीं निकल रही थी. उसने गुलदस्ते को कसकर पकड़ लिया. हर फूल जैसे उसके पिता के प्यार की कहानी कह रहा था. उस दिन नील को उसका सबसे अनमोल टीन जन्मदिन का उपहार मिला था . एक नई जिंदगी, जो उसके पिता ने अपनी जान देकर उसे दी थी.

कहानी

किराए का मकान

डॉ. श्रीमती कमल चतुर्वेदी

अपनी अमीरी और अन्य संपति के अभिमान में रहने वाले संत कुमार सहाय दस मकानों के मालिक तो थे ही, उनका स्वयं का भी बहुत बड़ा मकान था. ऊपर उनके दोनों बेटों के सर्वसुविधा युक्त मकान थे. नीचे उनकी पत्नी के साथ वे पाँच कमरों के मकान में रहते थे. बड़ा सा सुसज्जित बैठक कक्ष था. सामने सुंदर बगीचा और नक्काशीदार गेट भी था. गेट के पास एक और घर था मात्र दो छोटे-छोटे कमरे थे. उस घर में अकेले पड़े पड़े बाबूजी विगत जीवन के ढेर से प्रश्नों के उत्तर तलाशा करते थे. वक्त की बेरहम करवट ने उनकी जगह ही बदल दी थी. पहले बैठक में उनका ही साम्राज्य हुआ करता था. हर एक व्यक्ति उनसे सलाह लेता था. उनके बगैर पूछे घर में कभी कुछ न होता था. उनकी पत्नी के देहांत के बाद उन्होंने अपनी सारी संपति, सारे मकान अपने एकमात्र बेटे संत कुमार को इस भाव से सौंप दिये थे कि संपत्ति सुरक्षित रहेगी. परन्तु संतकुमार ने सारे किराए और अन्य खेत बगैरा पर ऐसा अधिकार जमाया कि वे सर्वथा असुरक्षित हो गए थे. अजनबी से एकाकी बाबूजी की दबंग आवाज़ भी सहमकर इतनी सिमट गई थी, कि किसी को सुनाई नहीं देती थी और कोई सुनना भी नहीं चाहता था.

कल सुबह एक व्यक्ति आया और बड़ी विनम्रता से पूछने लगा, संतकुमारजी, आपके यहाँ कोई कमरा खाली है क्या? मेरे लड़के को होस्टल में कोई रूम नहीं मिल रहा है. लड़के का साल भी खराब हो सकता है. आपकी बड़ी तारीफ सुनी है. आपके यहाँ कमरा मिल जाता तो हमारी बड़ी समस्या मिट जाती.

संत कुमार सोच रहे थे, कौन सा कमरा इन्हें दिया जाय. सहसा उन्हें बाबूजी वाले कमरों की याद आ गई थी. बाबूजी वाले दो कमरों की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा- देखो भाई, ये कमरे कभी भी खाली हो सकते हैं. जैसे ही ये खाली होंगें हम आपको ही देंगें. आप चाहें तो एडवांस दे सकते हैं.

आगन्तुक ने बाबूजी वाले कमरे देखते हुए कहा. लड़के के लायक ठीक ही हैं, कमरे काफी छोटे लग रहे हैं पर कोई बात नहीं. अब आप बताइये यह मकान कब तक खाली होगा. इसमें जो भी किराएदार है उनसे कहिये जल्दी ही खाली कर दें तो मेहरबानी होगी.

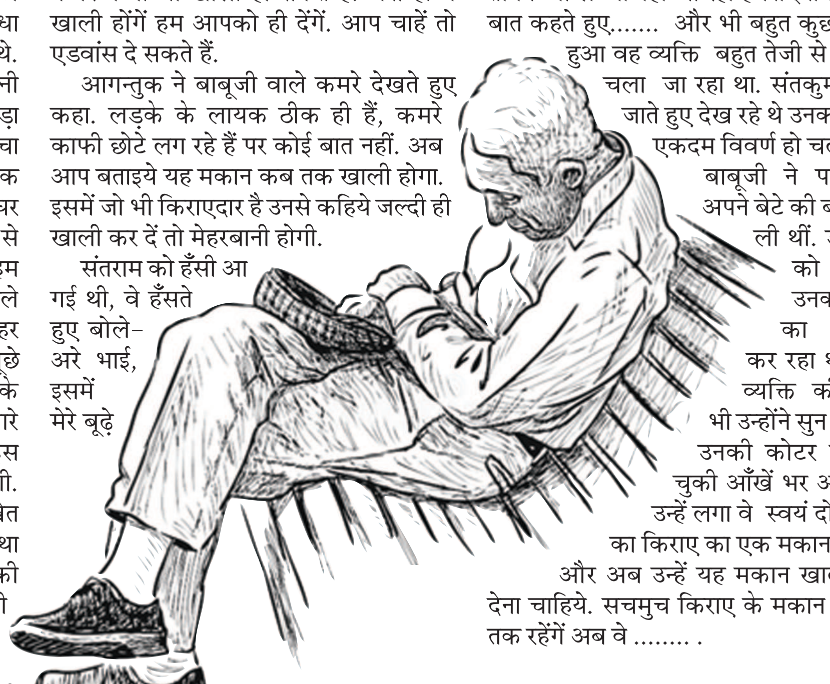

संतराम को हँसी आ गई थी, वे हँसते हुए बोले- अरे भाई, इसमें मेरे बूढ़े बीमार, बहुत अधिक कमज़ोर हो चुके बाबूजी रहते हैं. डॉक्टरों ने जबाब दे दिया है. जैसे ही बाबूजी....... हम यही मकान आपको दे देंगें. आप एडवांस जमा कर दें और वेफिक्र हो जाएँ.

उस व्यक्ति ने घृणा और आश्चर्य से संतराम की ओर देखते हुए कहा- संतराम जी, हम गलत जगह आ गए. हमें मुफ्त में भी आपका मकान नहीं चाहिये. आप कितने गिरे हुए व्यक्ति हैं, अपने जीवित पिता की मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं - जरा से किराए के लिये ...... आपको तनिक भी लज्जा नहीं आ रही हमसे इस तरह की बात कहते हुए....... और भी बहुत कुछ कहता हुआ वह व्यक्ति बहुत तेजी से वहाँ से चला जा रहा था. संतकुमार उसे जाते हुए देख रहे थे उनका चेहरा एकदम विवर्ण हो चला था.

बाबूजी ने पड़े पड़े अपने बेटे की बातें सुन ली थीं. उस बेटे को जो उनकी मृत्यु का इंतजार कर रहा था. उस व्यक्ति की बातें भी उन्होंने सुन ली थीं. उनकी कोटर में धँस चुकी आँखें भर आई थीं. उन्हें लगा वे स्वयं दो कमरों का किराए का एक मकान मात्र हैं और अब उन्हें यह मकान खाली कर देना चाहिये. सचमुच किराए के मकान में कब तक रहेंगें अब वे ....

संघर्षों की धूप में तपकर गढ़ी गई एक प्रेरक गाथा

हिमांशु कुमावत

आत्मकथा 'आनंद से अनार तक का सफर' एक साधारण जीवन के असाधारण बनने की सशक्त और प्रेरक कहानी है. यह कृति केवल जीवन-वृत्तांत नहीं, बल्कि संघर्ष, अनुभव, मूल्यों और संस्कारों का ऐसा जीवंत दस्तावेज है, जो व्यक्तित्व-निर्माण की प्रक्रिया को गहराई से उद्घाटित करता है.

लेखक डॉ. अनार सिंह ठाकुर ने अपने जीवन के विभिन्न पड़ावों को सरल, सहज और भावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया है. बचपन की शरारतों और अभावों से लेकर युवावस्था के संघर्षों तथा जीवन की जटिल परिस्थितियों तक का चित्रण अत्यंत जीवंत है. बचपन के प्रसंग पढ़ते हुए हम भी मानो उसी समय में लौट जाते हैं और उन यादों में खुद को शामिल पाते हैं. यही आत्मीयता पाठक को कथा के भीतर तक ले जाती है.

यह यात्रा केवल लेखक तक सीमित नहीं रहती, इसमें माँ का स्नेह, मित्रों का साथ, भाई-बहनों का अपनापन, सहपाठियों की स्मृतियाँ, पत्नी का सहयोग और बच्चों की उपस्थिति, सभी मिलकर जीवन के एक व्यापक और मानवीय परिदृश्य का निर्माण करते हैं. यही संबंध इस आत्मकथा को और अधिक जीवंत और स्पर्शशील बनाते हैं.

पुस्तक चर्चा

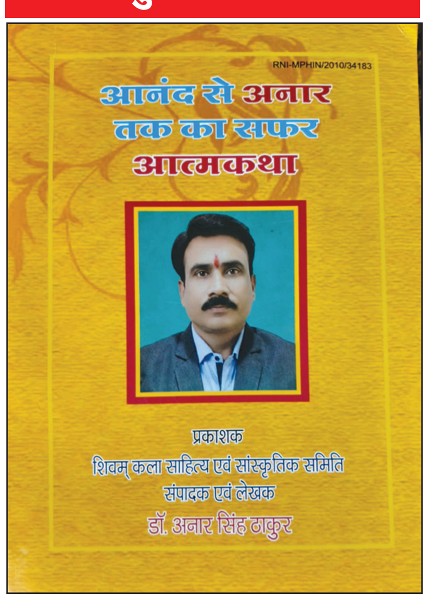

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का सूक्ष्म चित्रण इस कृति को व्यक्तिगत अनुभव से आगे ले जाकर एक व्यापक संदर्भ प्रदान करता है. लेखक ने अपने अनुभवों के माध्यम से समय की परिस्थितियों और जीवन-मूल्यों को भी उकेरा है, जिससे यह कृति एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज का रूप ले लेती है.

इस आत्मकथा की प्रमुख विशेषता इसकी ईमानदारी, स्पष्टता और निष्कपटता है. लेखक ने बिना किसी आडंबर के अपने सुख-दु:ख, असफलताओं और उपलब्धियों को संतुलित दृष्टि से प्रस्तुत किया है. यह पारदर्शिता पाठक के मन में विश्वास जगाती है और उसे लेखक के जीवन-सफर से गहराई से जोड़ती है.

शिक्षा और समाज के क्षेत्र में लेखक का योगदान उल्लेखनीय रहा है. इसी समर्पण के परिणामस्वरूप उन्हें एशियन एजुकेशन अवॉर्ड, एयर इंडिया बोल्ड अवॉर्ड तथा इंडियन एजुकेशन अवॉर्ड जैसे प्रतिष्ठित सम्मान उनके कार्यों की सार्थकता को रेखांकित करते हैं.

भाषा की दृष्टि से कृति सहज, प्रवाहमयी और संप्रेषणीय है. अनावश्यक अलंकरण से मुक्त यह लेखन अपनी सरलता में ही प्रभाव पैदा करता है. भावों की गहराई इसे न केवल पठनीय बनाती है, बल्कि पाठक को आत्ममंथन के लिए भी प्रेरित करती है. यद्यपि कुछ स्थानों पर विवरण का विस्तार गति को थोड़ा धीमा करता है, फिर भी वही विस्तार अनुभवों की गहराई को अभिव्यक्त करने में सहायक सिद्ध होता है. इस अर्थ में यह कृति केवल पढ़ी नहीं जाती, बल्कि अनुभव की जाती है. यह एक प्रेरणादायक, संवेदनशील और विचारोत्तेजक आत्मकथा है, जो पाठकों को अपने जीवन में संघर्षों से जूझने का संबल देती है और जीवन के प्रति एक सकारात्मक, संतुलित दृष्टिकोण विकसित करती है. यह कृति पाठकों के मन पर छाप छोड़ती है और उन्हें अपने जीवन पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती है.

आनंद से अनार तक का सफर (आत्मकथा)
डॉ अनार सिंह ठाकुर
मूल्य - 300 रुपए
शिवम कला साहित्य एवं सांस्कृतिक समिति, टोंकखुर्द देवास (मप्र)

कविता

मन

अर्चना त्यागी

जब जब आहत होता है मन
टप-टप आँसू रोता है मन.

कुछ कहते न बन पाए जब
अपना दामन भिगोता है मन.
इच्छाओं के सागर में डूब,जब
खाली हाथ लौटा है मन.

कुछ आर पार न हो दुख का
मुस्कान औढ़ लेता है मन.
समझाती हूं, यह है जीवन
फिर भी बरबस रोता मन.

तुमसे प्रश्न, कभी खुद से प्रश्न
जब जवाब सोच लेता है मन.
जो है, उसकी मर्जी है, फिर भी
हार मान दुख पाता है मन.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी